International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्वरविलास सैगल

प्रा. डॉ. वनिता तु. भोपत (केतकर),(संगीत विभाग)

श्री. शिवाजी कला, वाणिज्य व विज्ञान म. वि. अकोला

सारांश :

सैगल एक अभिनेता थे लेकिन उसमे एक सुंदर व्यक्तित्व था उनके जीवन की कई घटनाएँ हम सभी के लिए विशेष रूप से कलाकारो के लिए महत्वपूर्ण है । सैगल 1930 से 1940 के दशक के दौरान भारतीय सिनेमा के पहले सुपस्टार हो सकते हैं लेकिन यह उनके सिर नही चढा। कई फिल्मो मे उन्होंने प्रसिध्द लोगो की मदत की।

Studio मे काम करनेवाले technician से हसते खेलते बाते किया करते थे और कई बार उनकी आर्थिक मदत भी करते थे। उन्होने गरीबी और जीवन के कटु सत्य को करीब से देखा है, वैसे ही उनका गायन मन बुध्दि और आत्मा के संगम को दर्शाता है। गाने के साथ साथ वे अपने अभिनय में भी अपनी भूमिका के अनुरुप थे।

सबसे बडा आश्रचर्य यह है कि वे बिना शास्त्रीय संगीत सीखे किसी भी प्राकार के गीत को सहजता और खूबसूरती से और खूबसूरती से गाते थे।

'ऐसा कोई फनकारे मुकम्माल नही आया
नग्मो का बरसता हुआ बादल नही आया
संगीत के माहिर तो बहूत आये लेकिन
दुनिया में दुसरा सहगल नही आया।

प्रास्तावना

जम्मू में कुंदनलाल बचपन में, नवरात्री के दौरान रामलीला बड़े उत्साह के साथ मनाई जाती थी। जब व दस वर्ष के थे तबसे उन्होंने इसमे सीता की भूमिका निभाई थी। ऐसा उल्लेख है कि सीता की मौखिफ रागदारी पर आधिारित बागेश्री राग में 'सुमन वराशी सातसूत चले', मालकस राग मे-

'राम गाथा राजिव विलोचन' सिंधुराग मे 'अनुज जानकी शीत निरंतर', काकी राग मे
दिन तोके बिते जाते है आदि गीतो का उल्लेख है।

1931 मे सवाक चलचित्र के आगम ने चित्रपट जगत में एक महत्वपूर्ण क्रांति का सृजन किया 1935 मे पार्श्वगायन शैली के सुत्रपात ने सोने पर सुहागा का काम किया। अनेक कलाकार इस क्षेत्र में आए और उन्होंने उपने योगदान से चलचित्र जगत को समृद्ध किया। नये-नये प्रयोग होने लगे जिन्होंने ऐसी मजबुत आधारशिला सखी जीस पर 1940 के बाद नवीन चित्रपट का विशाल भवन खडा हुआ। इस दिशा में कुछ संगीतकार जैसे रायचद्र बारोल, पंकज मलिक, तिमिर बरन, खेमचन्द प्रकाश अदिने अपना स्थान बना लिया। गायन के क्षेत्र में वहि श्रेय के. एल. सहगल, के.सी. डे पहाडी सान्याल कानन बाला, उमाशशि, खुर्शीद आदि को प्राप्त है। उस समय अभिनेताओ का कुशल गायक होना भी जरुरी था। इसलिए वही विभूतियां अपना स्थान बना सकी जो गायन व अभिनय दोनो में दक्ष थी लेकीन कलाकारो की इस लंबी श्रंखला में सहगल का स्थांन अद्वितीय है जिसने अभिनेता के रुप मे प्रथम महानयक और गायक के रूप मे स्वर्गिम आवाज वाला सहगल की उपस्थियां प्राप्ता की।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इस महान कलाकार का जन्म 11 अप्रैल सन 1904 काश्मीर की श्रीनगर मे हुआ था। मैट्रिक पास करने के बाद सहगल को रेल्वे क्लर्क की नौकरी मिल गई। कुछ समय तक उन्होंने टाइपराइटर मैकेनिक का कार्य भी किया किन्तु इस सब कामों मे से उन्हे एक भी काम रूचिकर नही लगा। कुछ समय बाद उबगकर सहगल ने पंजाब की भूमी छोडदी और बम्बई चले आए।

अब श्री सहगल श्री बोरल के संरक्षण मे कलकत्ते के न्युथिएटर्स के प्रसिद्ध गायक तथा अभिनेता थे। सर्वप्रथम 'पुरन भक्त' नामक फिल्म मे नायक की भुमिका मिली इस चित्र की सफलता के बाद उनकी लोकप्रियता बढ गई फिल्म जगत मे एक नवीन क्रांती आ गई। सहगल को चंडिदास , देवदास, जिन्दगी, प्रेसीडॅन्ट, जिन्दा लाश, दुश्मन, धरती माता, पुजारिन, स्ट्रीटसिंगर लगन तथा मेरी बहेन आदि चित्रो में अपनी प्रतिभा उडलने कापूरा अवसर मिला।

सहगल की सबसे बडी विशेषता यह रही की उन्होने अपने जीवन काल में सभी गीत भावपूर्ण गाये जो भी संगीत जन जीवन के समक्ष रखा उसमें शास्त्रीय संगीत के प्रश्चात तत्व और सरल संगीत की सरलता विद्धमान थी। इसलिए सहगल के कंठ से निकला प्रात्येक गीत नारा बनता चला गया।

श्री कुन्दनलाल सहगल ने सोलह वर्ष तक फिल्म जगत की सेवा की। अपने स्वास्थ के कारण बम्बई छोडकर जालंधर चले गये और ऐसे गये की फीर बम्बई लौटेही नही। सन १९४६ की १८ जनवरी सहगल के लिए निर्वाण तिथी बनी।

रणजीत मुवीटोन के श्री शाद ने इस अमर कलाकार के जीवन पर अमर सहगल नामक फिल्म बनाकर फिल्म उध्दोग की और से उन्हे श्रध्दांजली अर्पीत की है, जिसमें इस सहगल संगीत को जोडते हुए हम भी उस सुरीले आत्मा के प्रती श्रध्दावान है।

निष्कर्ष :

अद्वितिय गायक कुन्दनलाल सहगल ने सवाक सिनेमा के प्रारंभ से स्वंतत्रतापूर्व काल (१९३१-४७) तक संगीत जगत पर अपनी विशिष्ट आवाज व अदाकारी से एकछात्र राज किया भारतीय फिल्म संगीत जगत के प्रारंभिक चरण मे गायन का कोई निश्चित स्तर नही था, परन्तु सहगल के आगमन से फिल्म संगीत जगत मे बदलाव आने लगा उन्होंने फिल्म संगीत का स्तर निरन्तर उँचा उठाये रखा और उसे निर्धारित करने मे महत्वपूर्ण योगदान किया। निसंदेह संगीत निदशर्को को सहगल की आवाज वरदान सिध्द हुई अपनी आवाज की मादक गुंज के कारण वह अमर गायक के रूप में जाने जाते है।

संदर्भ ग्रंथ :

सैगल संगीत एक अनुभव — डॉ. सौ. संगीता नेरुरकर

सैगल स्वरयुग — रमेश देसाई आवृत्ती पहिली जुन १९९९

अमर गायक व अभिनेता कुन्दनलाल सहगल — डॉ. सीमा जौहरी राधा पहिलेकेशन्स

सैगल स्वरविलास- विजय बावडेकर प्रकाशक — सौ वीणा बावडेकर प्रथमावृत्ती पुण्यस्मृतिदिन 18, जानेवारी 2007

सहगल संगीत - प्राकाशक संगीत कार्यालय हाथसर

सैगल — गंगाधर महाम्बरे